



पत्र-पुष्प



“स्व-उन्नति तथा विश्व सेवा प्रति विशेष प्रेरणायें”

(दीपावली के पावन पर्व की शुभ बधाईयां)

(25-10-20)

परमप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा रूहानी विचित्र तारामण्डल के चमकते हुए सितारे, विश्व की सर्व आत्माओं पर अपनी दिव्यता का प्रभाव डालने वाले निमित्त सेवाधारी टीचर्स बहिनें तथा देश-विदेश के सभी दैवी परिवार के नूरे रत्न, सफलता के सितारों प्रति,

ईश्वरीय स्नेह सम्मन मधुर याद के साथ दीपावली, नया वर्ष और भैया दूज की बहुत-बहुत दिल से हार्दिक बधाईयां स्वीकार हो।

यह संगमयुग के यादगार पर्व तो हम सब हर वर्ष खूब उमंग-उत्साह से मनाते, सदा एक दो बधाईयां देते, मुख मीठा कराते हैं। अभी तो मीठे बाबा की भी हम सब बच्चों के प्रति कितनी शुभ आशायें हैं। बाबा कहे बच्चे, अभी तो हर एक को अपनी सम्मन स्टेज द्वारा “ज्योति बिन्दु रूप” का और “फरिश्ते रूप का” साक्षात्कार कराना है। आज तो मीठे बाबा ने सेवा का भी यथार्थ अर्थ सुनाया है कि सेवा अर्थात् हर आत्मा के प्रति सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना का भाव। सेवा में तपस्या साथ-साथ समाई हुई है। त्याग, तपस्या और सेवा इन तीनों का कम्बाइन्ड रूप ही सच्ची सेवा है। त्याग अर्थात् नम्रता और तपस्या अर्थात् एक बाप के निश्चय और नशे में दृढ़ता। सेवाधारी न तो खुद कभी डिस्टर्ब होते और न दूसरों को डिस्टर्ब करते। सेवा का विशेष गुण सन्तुष्टता है। तो ऐसी सूक्ष्म चेकिंग करते हुए आप सब वर्तमान समय प्रमाण विशेष तपस्या द्वारा विश्व कल्याण की बेहद सेवायें तो कर ही रहे हो। चारों और तपस्या की बहुत अच्छी लहर चल रही है।

आज एक शुभ विचार आ रहा है कि **वर्तमान विश्व की परिस्थितियों को देखते हुए, स्वयं को, बेहद यज्ञ को और अपनी इस भारत भूमि को निर्विघ्न व सतोप्रधान बनाने के लिए हम सब मुरली क्लास के बाद रोज़ 15 मिनट शान्ति और शक्ति का दान देने की सेवा करें।** ऐसा योग का प्रयोग करें जो वर्तमान विश्व से दुःख, भय और चिंता का वायुमण्डल परिवर्तन हो, सबके अन्दर आशाओं का दीप जगे कि हम सबका गति सद्गति दाता बाबा इस धरा पर आया हुआ है, वह सबको दुःख दर्द से छुड़ाकर अपने साथ वापस घर ले जायेगा। अब हमारी वह सुख-शान्तिमय नई स्वर्णिम दुनिया आई कि आई। ऐसी लहर चारों ओर फैल जाये। तो हर एक बाबा के विश्व सेवक बच्चे को सदा उमंग-उत्साह व खुशी में रह खुशियों की लहर फैलानी है। मीठे बाबा ने स्व-सेवा की सबसे अच्छी विधि बताई है - “अटेन्शन और चेकिंग”। तो हर एक को अपनी स्व-उन्नति के लिए अपना चार्ट अवश्य रखना है। समय प्रमाण मीठे बाबा ने जो विशेष अटेन्शन खिचवाया है कि

- 1) सारे दिन की दिनचर्या में बार-बार अशरीरी बनने का अभ्यास करते रहो।
- 2) विश्व सेवक बन मन्सा द्वारा शक्तियों का, वाचा द्वारा ज्ञान का, कर्मणा द्वारा गुणों का और सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा खुशी का दान करो।
- 3) बिन्दू बनो, बीती को बिन्दू लगाकर सबको बिन्दू रूप में देखने का अभ्यास करो।
- 4) चारों ही सबजेक्ट पर विशेष अटेन्शन देकर अपनी फुल मार्क्स जमा करो।

तो इन्हीं मुख्य बातों की चेकिंग का चार्ट रख अपनी स्व-स्थिति को शक्तिशाली बनाना है। बाकी हम सबकी प्यारी दादी गुल्जार भी आप सबको विशेष इन यादगार उत्सवों की बहुत-बहुत बधाई दे रही हैं।

अच्छा - सर्व को याद....

ईश्वरीय सेवा में,
बी. के. रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



“अब अपनी निर्विकल्प स्थिति बनाओ”

1) जैसे इस गेट की रखवाली करते हो वैसे माया का जो गेट है, उसकी भी रखवाली करनी है। इस गेट के अन्दर कोई भी आसुरी संस्कारों को, आसुरी संकल्पों को आने नहीं दो। पहले अपने अन्दर यह पहरा मजबूत हो, ऐसी रखवाली करते रहो तो यह स्थान निर्विकल्प बनाने वाला जादू का घर हो जायेगा, जिसमें किसी भी आत्मा आये, आते ही आसुरी संस्कारों और व्यर्थ संकल्पों से मुक्त हो जाये। ऐसी सर्विस जब करेंगे तब प्रत्यक्षता होगी।

2) हम मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी हैं, इस स्थिति को सेट कर दो। अगर एक बार सेट कर दिया तो आटोमेटिकली वही स्थिति चलती रहेगी। फिर सहज और सदा के कर्मयोगी अर्थात् निर्विकल्प समाधि में रहने वाले बन जायेंगे। ऐसे सहजयोगी ही सदाचारी होते हैं।

3) जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण... ऐसे नहीं लक्ष्य बहुत श्रेष्ठ हो और लक्षण साधारण हों। कोई भी विघ्न आता है तो उसका निवारण करने के लिए निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। ठीक निर्णय वही कर सकते हैं जो निर्विकल्प रहते हैं। व्यर्थ संकल्प, विकल्प बुद्धि में होने कारण, बुद्धि क्लीयर नहीं रहती इसलिए निर्णय भी नहीं कर पाते और निर्णय न होने कारण निवारण नहीं कर पाते।

4) जैसे तराजू की सही परख तब होती है जब कांटा एकाग्र हो, हचलच बन्द हो, दोनों तरफ समान हो जाते हैं। ऐसे ही जिसका बुद्धि-योग रूपी कांटा एकाग्र है, जिसकी बुद्धि में कोई हलचल नहीं और निर्विकल्प स्टेज व स्थिति है, जिसके बोल और कर्म में, लव और लॉ, स्नेह और शक्ति का बैलेन्स है, वही यथार्थ जजमेंट दे सकता है। ऐसी आत्मा सहज ही किसी को परखकर ठीक जजमेंट दे सकती है।

5) निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए अपनी श्रेष्ठ स्थिति - निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी और निर्विकल्प चाहिए। अगर इन चारों में से किसी भी बात की कमी रह जाती है तो यह श्रेष्ठ धारणा न होने के कारण स्पष्टता नहीं होती है। कोई भी उलझन बुद्धि को स्वच्छ नहीं बनने देती। स्वच्छता ही श्रेष्ठता है, तो अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ, तब ही बाप के समान सर्व-गुणों के मास्टर सागर का अनुभव कर सकेंगे।

6) सन्तुष्टता ज्ञान की सबजेक्ट का प्रत्यक्ष प्रमाण है। सन्तुष्टता सदा निर्विकल्प, एकरस के विजयी आसन की अधिकारी बना देती है। अभ्यास करो - एक सेकण्ड में निर्विकल्प, निरव्यर्थ संकल्प बन एकाग्र, एक बाप दूसरा न कोई, इस एक ही संकल्प में एकाग्र होकर बैठ जाएं और कोई संकल्प नहीं हो। सदा बुद्धि में रहे कि मुझे निर्विघ्न और निर्विकल्प बनना ही है, इसमें रिस करो।

7) निर्वाण स्थिति ही निर्विकल्प स्थिति है। निर्वाण स्थिति निर्विकारी स्थिति है। निर्वाण स्थिति वाले सदा निराकारी सो साकार स्वरूपधारी बन वाणी में आते हैं। मैं निराकार साकार आधार से बोल रहा हूँ। मेरा असली स्वरूप निराकार है, साकार आधार है। चलते फिरते कार्य करते निराकार सो साकार आधार से यह कार्य कर रहा हूँ तो निर्विकल्प स्थिति, निराकारी स्थिति, निर्विघ्न स्थिति स्वतः रहेगी, मेहनत से छूट जायेंगे।

8) किसी भी कार्य के सफलता की दो श्रेष्ठ भुजायें हैं “एकता और एकाग्रता”। एकाग्रता अर्थात् सदा निरव्यर्थ संकल्प और निर्विकल्प। जहाँ एकता और एकाग्रता है वहाँ सफलता गले का हार है।

9) बन्धनमुक्त बन बाप समान कर्मातीत स्थिति का विशेष अभ्यास करते, दुनिया को न्यारे और प्यारेपन का अनुभव कराओ। अचल, अडोल, निर्विघ्न, निर्बन्धन, निर्विकल्प, निर्विकर्म अर्थात् निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - इसी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ तब कहेंगे बाप समान।

10) निःस्वार्थ, निर्विकल्प स्थिति में स्थित रह सेवा करो तो स्वयं भी सदा सन्तुष्ट और हर्षित रहेंगे और दूसरे भी सन्तुष्ट रहेंगे। सेवा के बिना संगठन नहीं होता। संगठन में भिन्न-भिन्न बातें, भिन्न-भिन्न विचार, भिन्न-भिन्न तरीके, साधन, यह तो होना ही है। लेकिन बातें आते भी, अनेकों को एक बाप की याद में मिलाने वाले, एकरस स्थिति वाले बनो। कभी भी अनेकता में मूँझो नहीं - अब क्या करें, बहुत विचार हो गये हैं, किसका मानें, किसका न मानें? अगर निःस्वार्थ, निर्विकल्प भाव से निर्णय करेंगे तो कभी किसी को कुछ व्यर्थ संकल्प नहीं आयेगा।

11) हर एक के सम्पर्क में आते सबके प्रति कल्याण की, स्नेह की, सहयोग की, निःस्वार्थपन की निर्विकल्प वृत्ति हो, निरव्यर्थ-संकल्प वृत्ति हो। कई बार किसी भी आत्मा के प्रति व्यर्थ संकल्प वा विकल्प की वृत्ति होती है, तो जैसी वृत्ति दृष्टि और वैसी ही उस आत्मा के कर्म की सृष्टि दिखाई देती है।

12) देह अभिमान के कारण अगर कभी कोई ग़लती हो भी जाती है, तो ग़लती होने के बाद उसी ग़लती को सोचते रहना। क्यों, क्या, कैसे, ऐसे नहीं, वैसे..... कई रूपों से उसे सोचते रहना ही विकल्प है। वह बात आपको छोड़कर चली जाती है लेकिन आप बात को नहीं छोड़ते हो। जितना समय सोचने स्वरूप बनते हो, यथार्थ स्मृति स्वरूप नहीं बनते हो, तो दाग के ऊपर दाग लगते जाते हैं।

13) कई बार पेपर का टाइम कम होता है लेकिन व्यर्थ सोचने का संस्कार होने के कारण पेपर का टाइम बढ़ा देते हैं। सेकण्ड पूरा हुआ और निर्विकल्प स्थिति बन जाये – यह संस्कार इमर्ज करो। निर्विकल्प बनने के लिए सदा अपने श्रेष्ठ भाग्य को, परमात्म पालना को बार-बार स्मृति में लाओ।

14) समान बच्चों की विशेषता है – सदा निर्विघ्न, निर्विकल्प, निर्माण और निर्मल। वह आत्मा सदा स्वतन्त्र होती है, किसी भी प्रकार के हृद के बन्धन में बंधायमान नहीं होती। सबसे पहली स्वतन्त्रता है देहभान से स्वतन्त्र। जब चाहे तब देह का आधार ले, जब चाहे देह से न्यारे हो जाएं। देह की आकर्षण में नहीं आये। कोई भी पुराने स्वभाव और संस्कार के बन्धन में न आये। किसी भी देहधारी आत्मा का सम्बन्ध-सम्पर्क आकर्षित न करे, तब निर्विकल्प स्थिति रह सकती है।

15) अभी तीव्रगति का, तीव्र पुरुषार्थ का समय है, साधारण पुरुषार्थ का नहीं। सेकण्ड में परिवर्तन का अर्थ है – स्मृति स्वरूप द्वारा एक सेकण्ड में निर्विकल्प, व्यर्थ संकल्पों से निवृत्त हो जाएं। यह समय हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने का है, इसलिए किसी भी संकल्प विकल्प में समय गंवाना नहीं।

16) इस ब्राह्मण जीवन में सदा निर्विघ्न, निर्विकल्प, निरव्यर्थ संकल्प, इसका अच्छा चार्ट बनाकर दिखाओ तो बापदादा सुनहरी पुष्पों की वर्षा करेंगे। बिल्कुल स्वप्न मात्र भी निर्विघ्न और निर्विकल्प। स्व को देखो, समय को देखो, दूसरे की कमी को नहीं देखो। अगर देखते भी हो तो अपने मन में नहीं रखो।

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

“व्यक्तित्व में दिव्यता, सम्बन्धों में सरलता”

(दादी गुल्जार 09-08-02)

आप सभी दिव्य गुणों के गुलदस्ते हो ना! दिव्यगुणों के गुलदस्ते से जीवन महक जाती है। तो आप सबकी जीवन सदा ही महकी हुई रहती है ना! एक बार बाबा ने कहा था और कोई दान आप नहीं कर सकते हो लेकिन गुणदान तो कर सकते हो। ब्राह्मणों को दान तो नहीं करेंगे। सहयोग देंगे।

किसी में 99 अवगुण हो लेकिन एक गुण, एक विशेषता जरूर सभी में होती है। कोई उस विशेषता को जानते हैं और कोई अपनी विशेषता को भी जानते नहीं हैं। बाबा ने आपको अपना बनाया है तो बाबा कहते हैं - तुम सब विशेष आत्मायें हो। तो कोई विशेषता देखी तब तो आपको अपना बनाया। नहीं तो दुनिया में कितनी कुमारियां हैं, पढ़ी लिखी हुई बहुत जज, वकील हैं। बाबा को आप ही पसन्द आई तब तो आप बाबा की बनी ना! वो

बिचारी बाबा को ही नहीं पहचान सकती हैं, आपने बाबा को तो पहचाना। चलो कोई भी विशेषता आप में नहीं हो, यह विशेषता तो है कि भगवान को पहचाना कि नहीं पहचाना। तो यह विशेषता तो है, आप सबमें कि नहीं है? तो हरेक में कोई न कोई विशेषता होती जरूर है लेकिन विशेषता को कार्य में लगाना, उसको बढ़ाना। अभी जो उस विशेषता को पहचानते ही नहीं हैं, तो वह बढ़ायेंगे क्या? और जितना आप विशेषता को कार्य (सेवा) में लगायेंगे, अभिमान से नहीं लेकिन सेवा भाव से अगर उस विशेषता को कार्य में लगायेंगे तो आपकी विशेषता बहुत बढ़ती जायेगी और सेवा में बहुत सफलता मिलेगी।

बाबा ने जरूर कोई विशेषता आप में देखी, भगवान को परखने में तो कमी नहीं हो सकती ना। चलो हमारे में हो भी। तो

जरूर आप में कोई विशेषता है तब तो भगवान की नज़रों में आप आई और कोई नहीं आया। तो अपनी विशेषता को सेवा में लगाओ। मम्मा हमको कहती थी आप में यह विशेषता है इसको इस सेवा में लगाओ तो यह दुगुनी, तीगुनी हो करके 100 परसेन्ट हो जायेगी, इसीलिये हमारी जीवन जो है वो श्रेष्ठ बनाना या साधारण बनाना अपने हाथ में है। ऐसा हम नहीं कह सकते हैं कि मेरे को बहन ही ऐसी मिली ना, क्या करूँ, मेरा शायद भाग्य ही नहीं है, लेकिन कैसी भी बहन मिली, उसको अगर आपने ज्ञान के आधार से पार कर लिया, उसके संस्कार को आपने जान लिया और एक पेपर समझकर उसको पार कर लिया तो आपको मार्क्स बहुत ज्यादा मिलेंगी। ब्राह्मण परिवार में कोई भी कार्य में कोई एकजैम्पुल बनते हैं तो उनको एक्स्ट्रा मार्क्स मिलते हैं। तो क्यों नहीं हम ऐसे एकजैम्पुल बनें जिससे बाबा हमको एक्स्ट्रा मार्क दे।

कोई के आगे कोई पेपर बनकर आयेगा, कोई जिज्ञासु पेपर बनेगा, सेवा मिली, पूछा, नहीं पूछा... यह सब बातें तो बिल्कुल बचपन की हैं। यह बचपन की बातें और अभी समय कहाँ आके पहुँचा है, वानप्रस्थ में जाने का। अपने घर जाना है ना कि यहाँ ही रहना है? तो कोई बूढ़ा हो और गुडियों से खेलने लगे तो आपको क्या लगेगा, अच्छा लगेगा? तो आप अभी वानप्रस्थ अवस्था में जा रहे हो। तो वानप्रस्थ होके बच्चों जैसी बातें यह तो शोभती नहीं हैं। आजकल के जमाने के हिसाब से हमको अपने को बदलना है। दूसरा बदले तो मैं बदलूँ, मेरा यह कारण है.... आजकल कारण कहने और सोचने की मार्जिन ही नहीं है। बाबा कहते हैं कारण को निवारण करने वाले बनो। कारण बता करके हम अपने आपको स्वयं ही ढीला करते हैं। और कारण को निवारण करने वाले बन जाओ, समस्या को समाधान करने वाले बन जाओ तो समस्या कहाँ जायेगी। समस्या नीचे रह जायेगी और समाधान करने वाली मैं बनूँगी तो मैं ऊँची हो जाऊँगी।

अपने को बदलना तो अपने हाथ में है, दूसरे को बदलना मुश्किल है, चलो ठीक है। आजकल के हिसाब से बाबा ने विधि बताई है कोई कितना भी कठोर पत्थर हो लेकिन शुभ भावना शुभ कामना दिल से हो तो मुश्किल सहज हो सकता है। दुश्मन भी महान मित्र बन जाता है, ऐसे इसके प्रैक्टिकल मिसाल हैं। अज्ञानी के प्रति यह है कि यह बदल सकता है तब तो कोर्स आदि कराके उसको वैसा सम्पर्क में लाकर व्यवहार करते हैं और ज्ञानी के लिये कहेंगे कि यह तो बदलना ही नहीं है, यह कैसे हो सकता है। फिर तो आपकी समझ में कुछ गड़बड़ है। हमने तो यह भी ठेका उठाया है कि 5 प्रकृति के तत्वों को भी हम बदलेंगे। उसको हम अपने योगबल से बदल सकते हैं और जो हमारे

साथी हैं, ड्रामा अनुसार जो भी साथी मिले हैं उन ब्राह्मण आत्माओं को नहीं बदल सकते हैं। यह बातें और बहाने सारे दिन में कितने होते हैं, अगर कोई गिनती करो तो 100 से भी ज्यादा हो सकते हैं।

वर्तमान समय जो भी हो रहा है, जो भी (अच्छा बुरा) सुनने देखने को मिल रहा है, यह सब आपके पेपर हैं, बिना पेपर के कोई पास होता है। के.जी. वाले का भी पेपर होता है। वह भी पेपर के बिना आगे नहीं बढ़ सकते हैं। तो हम 21 जन्म का राज्य भाग्य लेंगे, आधाकल्प पूज्य बनेंगे, आधा कल्प राजा बनेंगे और बिना पेपर के! यह कैसे हो सकता है? ब्राह्मणों के संसार के हिसाब से अभी स्थापना का कार्य बहुत आगे बढ़ गया है। उसमें आप समझो पहले बहुत अच्छा था, अभी ऐसा क्यों हुआ, अरे पहले तो तुमको अंगुली पकड़ करके बाबा ने चलाया। छोटे बच्चों को माँ बाप अंगुली पकड़कर चलाते हैं क्योंकि गिरे नहीं, चोट नहीं लगे। अभी वह जब बड़ा होगा तो भी माँ बाप अंगुली पकड़कर चलेंगे क्या? तो आप भी अब बड़ी हो गई हो। अभी पहले जैसे थोड़ेही बाबा आपको अंगुली से पकड़ करके चलायेंगे। अभी अपने पाँव पर भी खड़ा करेगा या बाबा ही चलाता रहेगा। वानप्रस्थ अवस्था आ गई है और फिर भी बाबा अंगुली पकड़के चलाये तो क्या लगेगा इसलिये आप यह सोचो कि वर्तमान समय हमको अपने को बदलना है, यह पक्का कर दो। संकल्प की स्याही से यहाँ मस्तक में लिख दो कि मुझे बदलना है। और नहीं बदलेगा, अच्छा मानो नहीं बदलता है तो आप क्या कर सकती हो? क्या आप उसका ही इंतजार करती रहेंगी कि वह बदले तो मैं बदलूँ। फिर राज्य भाग्य कब प्राप्त करेंगे, संगमयुग बीत जायेगा। तो उसको देख करके आप क्यों अपनी अवस्था को नीचे ऊपर करो। अच्छा उसके संस्कार हैं, वह तो वैराइटी संस्कार होंगे ही क्योंकि इतना बेहद ड्रामा है। वृक्ष में एक ही तना हो तो वृक्ष आपको अच्छा लगेगा क्या? तो यह भी ब्राह्मण संसार है, हरेक के वैराइटी संस्कार होने ही हैं, यह पक्का कर लो। एक जैसे नहीं हो सकते हैं। 108 की माला है, उसमें एक नम्बर और 108 वाँ नम्बर क्यों बना? सब एक नम्बर क्यों नहीं बनें? कारण? संस्कारों का ही फर्क है ना। तो बड़ी बहन है या छोटी बहन है, आपके आगे बड़ी बहन ही पेपर है। पेपर समझकर पार करो या पेपर को ही देखते रहेंगे। तो पास कैसे होंगे? इसीलिये बाबा कहते हैं अभी जो समय चल रहा है उसके ढंग से विधि से चलो।

अगर सोचते रहेंगे कि यह होता है, यह होता है, लेकिन यह होता है ठीक है, राइट है, हम भी मानते हैं होता है, लेकिन उसको देख-देखके अपनी जीवन सारी इसी में ही गंवा देंगे। कोई

भी समस्या हिमालय जितनी बड़ी हो लेकिन मुड़ना तो आपको पड़ेगा, पहाड़ नहीं हिलेगा, यह अभी आप पक्का कर लो, मुझे बदलना है। वह बदले तो मैं बदलूँ, अभी यह रांग है। इस समय अनुसार यह स्लोगन हो ही नहीं सकता है। इस समय अनुसार हमारा स्लोगन है “मैं बदलूँगी”। मैं बदलके दूसरों को बदलायेगी। यह बदले तो मैं बदलूँ, यह है ही नहीं, इसलिये कभी भी इन बातों में नहीं जाओ। कितनी भी बड़ी समस्या हो, हिमालय जितनी भी लेकिन आप परमधाम जितनी ऊंची पहाड़ी पर जाके बाबा के साथ बैठ जाओ। तो कोई भी बड़ी समस्या क्या लगेगी? चींटी। नीचे से देखेंगे तो बहुत बड़ी बात लगेगी लेकिन परमधाम में बाबा के साथ बैठके देखो तो कुछ भी नहीं लगेगी! तो क्यों नहीं ड्रिल करती हो? इस ड्रिल की विधि को समय पर यूज करो। तो कभी कोई कम्प्लेन्ट वा कोई क्वेश्चन मन में नहीं रहेगा। यह सेन्टर हमारे पेपर हाउस हैं तो उसमें पेपर जरूर आयेगा, किसको मन से आयेगा, व्यर्थ संकल्पों विकल्पों से आयेगा, किसको साथियों से आयेगा, जिज्ञासुओं से आयेगा, किसको बीमारी के रूप में आयेगा। यह सब होगा और बाबा तो कहते हैं यह तो बढ़ने ही हैं। इसलिये नर्धिग न्यु। यह बड़ी बात नहीं समझो। हम बड़ी बात बना देते हैं इसलिये हमारा योग भी नहीं लगता है। योग में अनुभव होना चाहिए। बाबा कल्याणकारी है तो मेरा क्या-क्या कल्याण किया है, वह मेरे अन्दर संकल्प आये। बाबा के जो भी हम गुणगान करते हैं, वह मेरा अनुभव है कि रटा हुआ है... बाबा आप कल्याणकारी हो, सद्गति दाता हो...। उससे कुछ नहीं होगा। योग में हमारा मन लगना चाहिए।

बिन्दी रूप में नहीं रह सकते हो तो अव्यक्त फरिश्ते रूप में रहो। चार स्टेजेस आप पक्का रखो, लकीर के अन्दर रहो। एक तो बीजरूप अवस्था यह सारा टाइम मुश्किल है। थोड़ा टाइम होती है। और जितना जितना आप निरसंकल्प रहेंगे, इन बातों में नहीं जायेंगे उतना-उतना बिन्दी रूप की स्थिति ज्यादा होगी। लेकिन वह है ही नहीं, सारे दिन में हमारी स्टेज पॉवरफुल है ही नहीं और मैं ऊंचे ते ऊंची बिन्दी रूप, बीज रूप की स्टेज में जाना चाहती हूँ तो कैसे जायेगी? स्टेप बाय स्टेप जायेगी ना इसलिये बीज रूप अवस्था सबसे बढ़िया है, नम्बरवन स्टेज है। लेकिन सेकेण्ड स्टेज - फरिश्ते रूप में स्थित होना। मैं फरिश्ता हूँ। फरिश्ता माना डबल लाइट, हल्के और फिर तीसरी स्टेज है बाबा से रूहरिहान करने की, अच्छा मन नहीं लगता है, बाबा से रूहरिहान करने लग जाओ तो आपकी दिल लग जायेगी। उल्टे में तो नहीं जायेगी, व्यर्थ तो नहीं चलेगा और व्यर्थ नहीं चलेगा तो अच्छा टाइम तो पास होगा। पाप नहीं नाश हुआ लेकिन पाप बनेगा तो नहीं। इसलिये वह रूहरिहान की भी स्टेज है बस, दिल से अनुभव से

रूहरिहान हो। बाबा, आपने मुझे क्या दे दिया और क्या बना दिया है - उसकी लिस्ट निकालो और दिल से रूहरिहान करो तो इसमें भी मजा आयेगा।

फिर चौथी स्टेज है मनन। समझो आपको झुटके आ रहे हैं या अन्दर व्यर्थ संकल्पों के घुटके हैं। वह अगर हमारे चल रहे हैं तो हम बीजरूप या अव्यक्त फरिश्ता होने की कोशिश करेंगे, नहीं होगा इसलिये पहले मनन शक्ति से अपने व्यर्थ संकल्प को खत्म करो, सुस्ती को खत्म करो। मुरली हमारे मन बुद्धि का होम वर्क है। मुरली में जो प्वाइन्ट आपको अच्छी लगे उसका मनन करो। बाबा ने यह क्यों कहा? किस अर्थ से कहा? इससे क्या होता है? प्राप्ति क्या होगी? किसी भी बात का विस्तार करने के 5 शब्द होते हैं - क्यों, क्या, कब, कैसे, कौन... इससे आप भाषण भी तैयार कर सकते हो। चलो और सब भूल गया स्लोगन तो याद रखो, उसके ऊपर ही होम वर्क करो। तो मनन शक्ति भी बहुत मदद देती है। अच्छा किसी भी कारण से मूड खराब हुआ, क्यों हुआ? बाबा क्या कहता है, इस मूड को चेन्ज करने के लिये बाबा ने क्या-क्या विधियां दी हैं? उस पर मनन करने से आपकी स्थिति चेन्ज हो जायेगी क्योंकि मन के ऊपर ही सारा आधार है। तो मन को मनन करने में बिजी रखो फिर जो भी खराबियां आती हैं, नीचे आने के कारण बनते हैं, सब खत्म हो जायेंगे। तो मनन शक्ति को बढ़ाओ। संस्कार परिवर्तन करने के दृढ़ निश्चय बुद्धि बनो। दूसरे को नहीं देखो, दूसरे को देखा तो गये। फिर अपनी तकदीर आपके हाथ में नहीं आयेगी इसलिये बाबा ने कहा है 3 पर काटो। पर चिन्तन, परमत, परदर्शन। यह तीन पर कट करो और एक पर याद रखो। वह कौनसी? परोपकार। वह भी पर है लेकिन परोपकार। तो यह मनन शक्ति से, ज्ञान तलवार से कट जायेगा।

तो ऐसी अवस्था बनाओ। मुझे अपने स्वमान में रहना है, स्वयं को देखना है। कभी यह नहीं समझो कि क्या मैं ही झुकती रहूँ, मेरे को ही झुकना है, मेरा ही पार्ट है क्या झुकने का। अरे! यह झुकना नहीं है यह और ही झुकाना है, सारी दुनिया आपको पूजेगी। झुकेंगी तो सुख देंगी, सुख लेगी। ऐसे नहीं सोचो कि मेरा भी तो कोई सुने ना, मेरा भी कोई सोचे ना, मेरा मेरा आया कहाँ से? मेरा मेरा कहेंगे तो कोई नहीं सुनेगा। बाबा भी कहेगा चल देखें क्या करती है। इसीलिए बाबा, बाबा बस, बाबा बैठा है, बाबा सुन रहा है, बाबा कर रहा है, बाबा चला रहा है, बाबा-बाबा-बाबा-बाबा। तो जहाँ बाप है वहाँ पाप नहीं। और जहाँ पाप होगा, वहाँ बाप नहीं। याद कितना भी करो बाबा बाबा आयेगा ही नहीं। इसीलिए अभी के जमाने के हिसाब से इन छोटी छोटी

बातों को भूल, अभी वानप्रस्थ अवस्था याद करो। अभी यह सब छोड़ो।

(बहिनों ने कुछ प्रश्न पूछे)

श्रीमत क्या है? जो बाबा की मुरली है वही श्रीमत है। अगर कोई बहन कुछ भी डायरेक्शन देती है तो बाबा ने जो कहा है वैसे ही कहेंगी ना। अगर मनमत रीति से कोई बात देती है तो उसको श्रीमत थोड़ेही कहेंगे। श्रीमत माना जो मुरलियों में बाबा ने अमृतवेले से रात्रि तक डायरेक्शन दिये हैं वह है श्रीमत। इसलिये स्वमान में रहो और श्रीमत पर चलो। अगर कोई नहीं चलता है तो शान्त रहो, डिसकस नहीं करो। पत्थर क्या समझेगा? वह बदलेगा क्या? हम तो बदल जायें, हम तो अपना टाइम वेस्ट न करें। पता नहीं कल भी क्या हो जाये, इसलिए अपने स्वमान में रहो, स्व परिवर्तन की विशेषता लाओ। अभी यह सब छोड़ो, अभी तो उड़ना है, उड़ो डबल लाइट रहो। कुछ नहीं तो बस उड़ रही हूँ बाबा के साथ। परमधाम में जाओ, वतन में जाओ, साकार वतन में आओ, सेवा में जाओ, मन्सा सेवा करो इसी में ही बिजी रहो। फिर मन लगेगा फिर बीजरूप भी जल्दी हो जायेंगे।

कहीं-कहीं पर इविल सोल का चक्कर थोड़ा चलता है, उससे डर लगता है....क्या करें?

लेकिन इविल सोल आवे ही क्यों, जो डर लगे। इविल सोल आती किसके पास है? जो कमजोर होता है। योग ठीक नहीं होता है। तीन “पर” जो सुनायें उसमें कोई एक “पर” आ जाती है इसलिए इविल सोल आती है। भय का भी भूत होता है। भय तब लगता है जब आप अकेली हो, बाबा साथ में नहीं है। अगर बाबा हमारे साथ है तो भय कहाँ से आया? सर्वशक्तिमान भगवान मेरे साथ है और मुझे भय आ रहा है, तो कब निर्भय बनेंगे? भगवान के ऊपर भी कोई भगवान है क्या, जो हमको निर्भय बनायेगा? भय क्यों हो? कोई पाप कर्म है तो भय है। कोई कमजोरी है तो भय है। और यह इविल सोल कुछ भी नहीं है, यह अपने ही जो किये हुए पाप हैं उनका कभी अटैक हो जाता है और हम कहते हैं भूत आ गया, भूत लग गया। बस, मन ही नहीं लगता है, इविल सोल यह करती है, वह करती है। इन बातों का तुम ध्यान ही नहीं दो। कई बार सुन-सुनकर भी भूत लग जाता है। अगर कोई बात है भी, तो 3 से 5 बजे सवेरे-सवेरे विशेष संगठित रूप में पावरफुल योग करो। सब समाप्त हो जायेगा। बाकी इनके चक्करों में नहीं जाओ, न इनका वर्णन करो, न चिंतन करो, योगबल जमा करो। अच्छा - ओम् शान्ति।

“अटैचमेन्ट सत्य और श्रेष्ठ कर्म करने नहीं देती, इसलिए नष्टोमोहा बनो”

(दादी जानकी जी 29-08-04)

आप सुनने वाले हैं मैं निमित्त बोलने वाली हूँ। तो बोलने वाले को ज्यादा साइलेन्स में रहना है या सुनने वाले को ज्यादा साइलेन्स में रहना है? सोचके बोलेंगे तो वो भी सोच में ही रह जायेंगे। तो अभी सोचने का जमाना नहीं है, सोचने में भी थोड़ा समय जाता है। बाबा कहते मेरे बच्चों को व्यर्थ संकल्प, अयथार्थ संकल्प नहीं आ सकता है। तो इतनी साइलेन्स हो जो कोई संकल्प उत्पन्न ही न हो, स्वीट साइलेन्स। सूक्ष्मवतन में साइलेन्स के साथ प्रेम भी इमर्ज रहता है। भगवान का जो प्यार पाया हुआ है, उसे साइलेन्स खींचकर बैठती है। ऐसे है? मूलवतन में है एकदम डेड साइलेन्स, सूक्ष्मवतन में है स्वीट साइलेन्स, तो यह जो अनुभव है उसकी छाप लगती जाये। पुराने जो अनुभव हैं ना, ऐसे जैसेकि वो और किसी का पार्ट था, मेरा पार्ट ही नहीं था। चलो, मेरा ही था मानो तो वो भी पूरा हो गया।

पाँच विकारों में से रूलाता है - मोह। काम, क्रोध रूलाता नहीं है? क्रोध करते-करते किसको रूलाने बिगर रह नहीं सकते हैं वो अलग बात है। इतना क्रोध करे जो वो खूब रोये तब क्रोध करने वाला शान्त करेगा। परन्तु मोह छिपके छिपके रूलाता है। रोना बन्द तभी होगा जब नष्टोमोहा बनेंगे। तो सूक्ष्म कभी भी किसको रोना आता है माना मोह है, कहाँ न कहाँ कोई देहधारियों से लगाव है। बाबा की एक ही बात हमको पहले-पहले यह लगी हे आत्मा तू अविनाशी, बाकी सबको विनाशी जान। यह बात हमने पहले गीता में सुना था परन्तु तीर नहीं लगा था। भगवानुवाच यह सब विनाशी जान। आत्मा अविनाशी है, आत्मा का बाप अविनाशी है उनके द्वारा समझ मिलती है, उसमें जो ज्ञान मिलता है वो अविनाशी धन है। जब अविनाशी मिला तो

विनाशी से क्या मोहब्बत! जब हीरे मिले तो कौड़ियों से थोड़ेही खेलेंगे!

तो अभी भगवान बाप से अविनाशी लॉटरी मिल रही है। यह ऐसी लॉटरी मिली है जो बाबा ने कहा है हेल्थ हो और वेल्थ न हो। पर हम कहते हैं हेल्थ न हो, वेल्थ न हो, हैपीनेस हो तो...। क्योंकि दुनिया वालों को हेल्थ नहीं होगी तो हैपी नहीं होंगे, वेल्थ नहीं होगी तो हैपी नहीं होंगे, कोई मरेगा जियेगा तो हैपी नहीं होंगे। छोटी-छोटी बात में खुशी आई, छोटी-छोटी बात में खुशी गई। खुशी का आना है बिचारी आती है अल्पकाल के लिये, और दुःख रहता है सदाकाल के लिये, यह है कलियुग। इसलिये बाबा ने सदा सदा शब्द पक्का करा लिया। हमारे यहाँ 3 शब्दों की ट्रांसलेशन नहीं मिलेगी। एक ओम् शान्ति, दूसरा समझा, तीसरा अच्छा। फिर सदा शब्द की ट्रांसलेशन कभी नहीं कोई करें। विश्व भर में कहाँ भी जाओ तो ओम् शान्ति की ट्रांसलेशन नहीं है। इसे कहने से खुश हो जाते हैं, चेहरा ही चमक जाता है। फिर समझा, अच्छा-अच्छा, फिर सदा ऐसे रहना।

तो बाबा कहता है सार जो जानता है वो विस्तार में नहीं जाता है। दुःख है विस्तार में जाने से, कोई प्रकार का दुःख अन्दर पैदा हुआ माना विस्तार में गये। सयाना समझदार वो जो ज्यादा विस्तार में नहीं जाता है। शार्ट और स्वीट सुनने-सुनाने की इच्छा रखेगा। साकार बाबा को हमने एक शब्द बोला, अगर दुबारा वो रिपीट करेंगे तो आंख दिखायेगा। या भूल भी की सच सुनाया, फिर दुबारा शकल ऐसी उदास देखी तो कहेगा क्या हुआ है तुमको? बाप को सुनाया ना, बस। बाबा यह नहीं चाहता है कि पश्चाताप में भी अपनी घड़ी निष्फल करो। सच सुनाओ जरूर, क्योंकि गोलमोल भगवान नहीं जानता है। जो कहता है कि मैं सच बताता हूँ, वो सच नहीं बताता है। सच बताने वाले का आपेही पता चलता है। तो अपने आप जो सच्चा बनता है, सच बताता है, वही सच्चे बाप का सच्चा बच्चा है। उसको सदा याद रहता है कि मेरा सत्य बाप है, सत्य टीचर है, सत गुरु है उसको कभी यह भूलता ही नहीं है। इसके अलावा भी माता है, पिता है, बंधू सखा है... यह भी उसे याद रहता है।

भाई-भाई की दृष्टि का अभ्यास भी तब ही करेगा जब समझा हुआ है, तो जो अन्दर से अभ्यास करता है उसके अनुभव करने से आत्मा में बहुत शक्ति पैदा होती है। जब तक देह-अभिमान है माना भगत है। ज्ञान माना मैं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ... ऐसा अभ्यास करते-करते आत्मा का कनेक्शन जब परमात्मा से हो गया तो देह से भी कनेक्शन नहीं है, जैसे देह से एकदम न्यारा अनुभव करने लगेंगे। कईयों को डिटैच होना मुश्किल लगता है, अरे कोई ऐसे थोड़ेही डिटैच हो रहे हो, पर

अटैचमेन्ट से कुछ कर नहीं सकते हो। अटैचमेन्ट ऐसी चीज़ है जो सत्य कर्म, श्रेष्ठ कर्म करने नहीं देगी। अटैचमेन्ट विघ्न डालेगी। मोहजीत की कहानी बचपन में भी सुनते थे, किसने शरीर छोड़ा अच्छा, हो गया। सब कहेंगे हो गया, नौकर भी कहेगा, राजा भी कहेगा, रानी भी... सब कहेंगे जो होना था हो गया। तो जाने वाला भी खुशी से जायेगा। गया ना, अच्छा ठीक है, इसलिये तो भोग लगाते हैं। प्यार है तो बनाके खाओ, उसको खिलाओ बाकी मोह में रोओ नहीं, रूलाओ नहीं। तो जिसको भी मन में मोह वश रोना आता हो वो आज अभी से खत्म कर दो। धर्मराज की दरबार में हम ऐसे जाये, जैसे दिलवाला बाप ने अपनी दिल में समाके बिठाया फिर सर्विसएबुल बन बये तो दिलतख्त पर बैठ गये, नूर पर बैठे हैं। सदा ही बाबा की दृष्टि महा सुखकारी है।

तो अपनी दृष्टि को देखो, मेरी दृष्टि में कौन है? शरीर को भी क्या देखें? पता है ना अन्तिम जन्म है अन्तिम घड़िया सफल करने के लिये हैं इसलिये शरीर में आत्मा बैठी है। अभी की यह घड़ियां सफल होंगी तो 84 जन्म हमारे अच्छे होंगे, यह गैरण्टी है तब तो बाबा के नज़दीक रहेंगे। इतना बाबा और हम बच्चे एक दो को जानते हैं। तो जैसे जो बाबा को फॉलो करे, फिर वो सिन्धी हो या पंजाबी, गुजराती हो या क्रिश्चियन... समझ है मैं बाबा का हूँ, बस। कभी रोने वाला, कभी हँसने वाला, कभी उदास, कभी अधीन होने वाला नशे से नहीं कह सकेगा कि मैं बाबा का हूँ। जिसको एकदम नशा चढ़ा हुआ है, वो कहेंगे मैं बाबा का, बाबा मेरा।

दुनिया वालों को तो अपने भविष्य का पता नहीं है और हमको पता है कि भविष्य हमारा यह है। भगवान हमारा बाप है, भाग्य हमारे हाथों में है, यह कल्प पहले मुआफिक भावी अटल बनी पड़ी है। ऐसे अटल निश्चय वाला कभी कोई किसी बात की फिक्र नहीं करेगा। जब इसमें निश्चय की कमी होती है तो हलचल में होता है कि क्या होगा? निश्चय का बल है, सच्ची भावना का भाड़ा है। संकल्प जो आया वो मिलता है क्योंकि ब्राह्मण बने हैं, कम बात है क्या! इतना रियलाइजेशन आती है, देवता बनने वालों को। तो अभी बाबा समझ देते हैं, अच्छी तरह से ऐसा रियलाइज करो कि मुझ पतित को पावन बनाने वाला पतित-पावन बाप मिला है। ज्ञान सागर बाप मिला है अब पावन नहीं बनेंगे तो कब बनेंगे? इसलिये कभी ऐसे मन के अन्दर से, आँखों से, चेहरे से रोने वाली शकल न हो। नहीं तो बाबा कहेगा क्या हुआ है, जो हुआ है, ड्रामा अनुसार हुआ है। कोई बड़ी बात नहीं है। ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

“मैं बाबा की, बाबा मेरा” इस संकल्प से पूरे समर्पित हो जाओ तो भटकना बन्द हो जायेगा

1) हमारे सर्व सम्बन्ध एक बाप से हैं। हम उस सच्चे माशूक के आशिक हैं, हम सभी उस सच्चे माशूक के इश्क (प्यार) को जानते हैं। एक बाबा की लगन कितनी प्यारी, मीठी, सुखदाई है। ऐसी लगन में मगन रहने वाले कभी किसी दूसरे की लगन में नहीं जायेंगे। अगर किसी की आपस में बहुत-बहुत प्रीत होती है तो उसे तोड़ना मुश्किल होता है। ऐसे जब बाप से हमारी पूरी लगन है, प्रीत है तो यह भी गुप्त खुशी वा नशा रहता है कि हमने तो उसी बाप को पाया है। सारी दुनिया कुछ भी नहीं है, एक तू इतना प्यारा है। हम उसी प्यार के समुद्र की नदियां हैं। इसी को ही हम कहते हैं निरन्तर योग में रहना, यह मस्ती बड़ी निराली है। बाबा के प्यार का अनुभव करते उसी मस्ती में रहो तो दूसरी कोई भी बात सामने आ नहीं सकती। यह पुरुषार्थ की बहुत सहज विधि है।

2) कई योग लगाते, मेहनत करते हैं लेकिन अनुभव नहीं होता! कहते भी हैं मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। यही पुरुषार्थ करते हैं कि मैं आत्मा हूँ, मेरा बाबा प्यारा शिवबाबा है, मुझे बाबा की सेवा में तत्पर रहना है। जितना समय बाबा की सेवा में जाये उतना अच्छा है। लेकिन फिर भी योग के गहरे अनुभव नहीं होते। मैं आत्मा इस शरीर से अलग हूँ, मैं आत्मा सुनती हूँ, आत्मा बोलती हूँ, यह मेरा शरीर है..। यह अभ्यास अभी तक कम है। जब हमने कहा – मैं आत्मा आपकी हूँ, तो मेरा सब कुछ आपका है अर्थात् मैं बाबा को ही समर्पण हूँ। आप आत्मा एक बाबा पर समर्पण हो जाओ तो यह जो संकल्प वा बुद्धि इधर-उधर भटकती है, वह भी समर्पण हो जायेगी। फिर यह कम्प्लेन खत्म हो जायेगी कि क्या करूँ मन भटकता है। विचार शक्ति, बुद्धि की शक्ति को समर्पण कर दो। फिर यह भी नहीं कह सकते कि यह मेरे संस्कार हैं। कभी यह नहीं कहा कि बाबा का यह संस्कार है। क्या कभी बाबा के लिए सुना है कि किसी ने कहा हो बाबा का संस्कार ऐसा है। तो हमें

अगर बाबा के समान बनना है तो संस्कारों के वश होकरके नहीं चलना है। यह संस्कार भी बाबा के हो गये। जैसा बाप वैसी मैं... यही मेरा पुरुषार्थ है। फिर यह जो कहते कि मेरा स्वभाव, मेरे संस्कार – ऐसी अनेक प्रकार की जो माया है वह समाप्त हो जाती है। बाबा भी कहते बच्चे मोहब्बत में रहो तो मेहनत से छूट जायेंगे। जब कोई माया से युद्ध करते हैं तो तरस पड़ता है। रावण के एक-एक शीश को कब तक काटते रहेंगे। एक मूल शीश को ही काट दो तो दसों कट जायेंगे। फिर घड़ी-घड़ी मुँह नहीं दिखायेगी।

3) बाबा कहते तुम सब हो कठपुतलियां और तुम कठपुतलियों को मैंने दी है श्रीमत की चाबी। तो बाबा ने जो श्रीमत की चाबी दी है उसी अनुसार बेफिकर बादशाह बन निश्चिन्त हो खेल करो। लेकिन सदा समझो हम राजर्षि, राजयोगी हैं। अपना आक्वूपेशन नहीं भूलो। योगी के लिए मूल चाहिए ज्ञान से पुरानी दुनिया का वैराग्य। हम हैं योगी लोग, न कोई अपना न कोई पराया। हमें कौन जानें। यह बहुत मस्ती थी। इसलिए कहती - हे आत्मा तू बाबा को स्वाहा हो जाओ, तो मन बुद्धि भी सब स्वाहा हो जायेगा। जब सब स्वाहा हो गया तो पुरानी दुनिया से वैराग्य हो ही जायेगा। पुरानी दुनिया तब तक खींचती है जब तक समर्पण नहीं हुए हैं। संकल्प शक्ति भी समर्पण है तो दूसरी कोई भी बात नहीं आ सकती। इसी का नाम है तपस्या। तो पहले अपने आपका त्याग करो अर्थात् समर्पण हो जाओ। जब आत्मा स्वयं समर्पण हो गई फिर तपस्या करना, अशरीरी बनना बहुत सहज है। अब हमारी तपस्या की दुनिया को भी दरकार है। तत्वों को भी इसकी दरकार है। हम सब देख रहे हैं दुनिया की हालत दिनप्रतिदिन गम्भीर होती जाती है, यह दुनिया की गम्भीर बातें हमें और भी प्रेरणा देती हैं कि हमें तपस्या करके विश्व को अपने साइलेन्स की किरणें देना है। अच्छा - ओम् शान्ति।